CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly | **UGC Approved** | **ISSN : 2319 - 8648**

Issue X Vol VII , April 2020 | **Sr. No. 64310** | **Impact Factor : 2.143**

रघुवीर सहाय के नाटकों में जीवनसंघर्ष

प्रा.डॉ.महादेव चिंतामणी खोत

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, श्रीकृष्ण महाविद्यालय गुंजोटी ता.उमरगा. जि.उस्मानाबाद

रघुवीर सहाय जी ने कविता उपन्यास और कहानियों के साथ-साथ कुछ नाटक भी लिखें है। आपने पहला रेडीयो नाटक 'अँधेरा' सन १९४८ में लिखा था और प्रसारण के पाश्चात्य सन १९५० में 'नवजीवन' दैनिक में प्रकाशीत हुआ था। 'अँधेरा','मन की बात' तथा 'सुख के लिए' यह उनके संपूर्ण रेडियों नाटक है। यह तीनों नाटक लखनौ रेडियों से प्रसारीत भी हुए है। रेडियों नाटय शिल्प के अनुसार ये नाटक काव्य नाटक की तरह शुरु होते है। इनके स्वतंत्र रुप से चार नटक भी प्रकाशीत हुए है। 'खाली पीपे का आत्मा"आदमी? किसके आदमी' 'आरामदेही कुरसी' 'घुटने' आदी आपके नटक है। आपने मुंशी प्रेमचंद जी की कहानियों पर टिव्ही फिल्म की पटकथा का लेखन भी किया है। आप ने मुंशी प्रेमचंद जी की 'नैराश्य' कहानी के आधार पर 'उधार की जिंदगी' और 'सुभागी' कहानी के आधार पर 'सुभागी' पटकथा का लेखन किया है।

दुनिया में किसी भी जीव कों जन्म लेने के बाद दुनिया के हर समस्या के साथ संघर्ष करना पडता है। दुनिया में आकर जो जीव संघर्ष से मूँह मोड लेता है वह दुनिया से मिट जाता है। वह स्वाभिमान की जिंदगी नही बिता सकता। इसलिए दुनिया के हर जीव के लिए जीवन एक संघर्ष होता है। इसके लिए आदमी भी अपवाद नही है। आदमी दुनिया में आता है तो उसके साथ सुख-दुख लेकर ही आता है। दुनिया में ईश्वर ने किसी को अमीर और किसी को गरिब बनाया है। किसी को जन्म भर के लिए संघर्ष करना पडता है और संघर्ष नही किया तो उसका अस्तित्व मिट जाता है। संघर्षशील जीवन और सामाजिकता का एक पहलू है उसका चित्रण रघुवीर सहाय जी ने अपने नाटकों में किया है।

'अँधेरा' 'नाटक का पिता' नोकरी के लिए झगड रहा है वह नोकरी के लिए प्रयत्न करता है लेकिन नोकरी नही मिल पाती है। घर में खाने के लिए आटा दाल, चाँवल कुछ भी नही होता, जलाने के लिए लकडी भी नही होती, वह पत्नी और रामू नामक लडके को दो समय का भोजन नही खिला पाता है। पिता अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए मेहनत मजदूरी पर नही जाता है। भूख से बेटा भूखा मर रहा है बेटे को पाँव में चप्पल पहने के लिए नही है। शरीर पर पहनने के लिए कपडे नही है। ऐसी अवस्था को देखकर माता-पिता दोनो को बूरा लगता है। माता विवश होकर अपने पती को काम करने के लिए अनुरोध करती है । वह कहती है की जग हॅसाई की डर से घर में भूखे रहना कहा का बडप्पन है? सफेद पोशी निबाहने के लिए घर के लोगों को भूखे मारेंगे क्या? अंत में रामू के पिताजी कहते है की मै किसी भी वर्ग समाज से नही डरूंगा। इस संदर्भ में रघुवीर सहाय जी लिखते है- "मै तो केवल आदमी हूँ। जिसे जीवित रहना है, क्योंकी उसने जीवित रहने के लिए जन्म लिया है। यदी मै स्वयं भूख से मर जावू तो ये खूद मेरे लिए लज्जा की बात होगी।"

'अँधेरा' नाटक में एक परिवार जीवन जीने के लिए संघर्ष करने के तैयार होता है तब अच्छी तरह से जिंदगी जी लेता है। जब तक आदमी संघर्ष करने के लिए तैयार नही होता तब तक आदमी अच्छी तरह से जीवनी नही बसा सकता है। इस नाटक के माध्यम से जीवन जीने के लिए संघर्ष का स्वीकार कर लेने का संदेश दिया है।

रघुवीर सहाय जी ने 'सुख के लिए' रेडीयो नाटक लिखा है। यह रेडीयो नाटक एक साथ लखनौ, इलाहाबाद,पटना, आदि केंद्रो से प्रसारीत हुआ था। 'सुख के लिए' नाटक के मुख्य पात्र विजय नाथ ने सुख प्राप्त करने के लिए किस तरह जीवन संघर्ष किया यह प्रस्तुत किया है। बेरोजगार युवक विजयनाथ रोजगार प्राप्त करने के लिए मारामारा घुमता था। भाभी कमला नामक पत्नी और विजयनाथ एक साथ जीवन जी रहे थे। विजय का कमला को शादी से पसंद नही करता था। विजय कमला को शादी के बाद में भी पंसंद नही करता था। विजय कमला को फुहड, देहाती कहकर उसके साथ अशिष्ठ व्यवहार करता था। विजय शेठजी की कंपनी में डेढसौ रुपयों की तनखा में हिसाब किताब देखने की किसी की शिफारिश से नोकरी प्राप्त करता है। विजय ने इलाहाबाद

Scanned with OKEN Scanner

युनिव्हर्सीटी से एम.ए. और एल.एल.बी. की उपाधि प्राप्त की है । इतना पढ लिख कर भी डेढ सौ रुपयों में हिसाब किताब लिखने की नोकरी करता है। विजय रेवा के साथ शादी करता है लेकिन विजय के पास रेवा को हनीमून के लिए ले जाने को समय नही मिलता। इसलिए रेवा विजय को छोडकर बलवंत से प्रेम करने लगती है। सेठ जाली रजिस्टर रखकर पच्चीस लाख का घाटा दिखाकर टॅक्स नही भरता था यह बात विजय को पता चलती है। विजय सेठ को पिस्तौल दिखाकर रामलाल ॲण्ड सन्स कम्पनी का आधा हिस्सा अपने नाम करवा लेता है। रेवा विजय से नफरत कर बलवंत से प्रेम करती है। विजय गोदामो मे माल लबालब भरकर बाजारों में माल की कमियाँ निर्माण करता है वही माल अधिक दामों मे बेचकर अमीर बनना चाहता है। युद्धकाल में मिलिटरी को राशन और अन्य सामान देने का ठेका लेता है। सभी माल गोदामो में भरने के बाद युद्ध होती ही नही समझौता होता है। इसी कारण मिलिटरी का ठेका खत्म होता है।गोदामो मे भरा हुवा माल जैसा के वैसा रहता है। रुपय कमाकर सुख प्राप्त करने के लिए हरदम संघर्ष करता रहता है।

रघुवीर सहाय ने विजयनाथ के जीवन संघर्ष को स्पष्ट किया है। विजयनाथ यह मानकर चलता है की अधिक धन प्राप्त करके अधिक सुख प्राप्त होगा। सुख प्राप्त करने के लिए जीवन भर संघर्ष करता रहता है। इस संदर्भ में विजयनाथ कहता है की- "मैने चोरी बाजारी की, जाली हिसाब बताएँ, लोगों को चूसा, लूँटा, मगर यह सब मै करता था और सोचता था इसी से मुझे तृप्ति मिल जाएँ शायद यही वह सुख है जिसकी मुझे खोज है।" इस प्रकार के सुख के लिए विजयनाथ का जीवन संघर्ष प्रस्तुत किया है।

रघुवीर सहाय ने 'मन की बात' नाटक मे नवयुवक का जीवन का जीवन जीने का संघर्ष प्रस्तुत किया है। आधुनिक युग में बेरोजगारी की समस्या निर्माण हुयी है। इस बेरोजगार के कारण युवक अच्छी खासी जिंदगी नही जी पा रहा है। रोजगार प्राप्त करने के लिए गाँव छोडकर शहर में आकर छोले बेचने का काम करता है। हर कोशीश से रोजगार प्राप्त करता है। बेरोजगार युवक का 'मन की बात' नाटक में उसका जीवन संघर्ष दिखाई देता है।

रघुवीर सहाय ने 'अँधेरा' 'मन की बात' और 'सुख के लिए' नाटक के माध्यम से जीवन संघर्ष को प्रस्तुत किया है। जीवन एक संघर्ष है यह मानकर जीवन जीने के लिए, जीवीत रेहने के लिए जीवनभर संघर्ष करके ही जीना पडता है। दुनिया की आबादी दिन-प्रतिदिन बढ रही है लेकिन उतनी नोकरीयां उपलब्ध नही है। इसी कारण कुछ नोकरीयों के लिए बहुसंख्य उमेदवार उपस्थित होते है। पेट भरने के लिए किसी ना किसी का रोजगार को अपनाना ही पडता है। रोजगार प्राप्त करने के लिए देहात छोडकर लोग शहर में जा रहे है। गॉव के गाँव उजड रहे है।और शहरों मे बस्तियॉ ही बस्तियॉ बस रही है। रोजगार के लिए शिफारीश पत्र, रिश्तेदारी, रिश्वतखोरी बढ रही है। बेरोजगारी की समस्या दिन प्रतिदिन भयावह बनती जा रही है।

'अँधेरा' नाटक में नाटककर ने बेरोजगारी का सवाल उठाया है। बेरोजगार के कारण उस परिवार पर भूखे मरने की नौबत आती है। 'अँधेरा' नाटक का नायक दर दर की ठोकरे खाता है। अपने परिवार को कपडे नही दे पाता। पाँव को चप्पल नही मिलती। दो समय का भोजन भी नही मिलता है। घर में आटा दाल चाँवल समाप्त होता है। लालटेन जलाने के लिए मीट्टी का तेल भी नही मिलता इसी लिए अँधेरे मे रहते है। 'अँधेरा' नाटक में नाटककार लिखते है की – "इंटरव्यू के बाद साहब ने कहॉ फिलहाल आप जाईए हमे जरुरत होगी तो हम बूला लेंगे ऐसा तो सभी कह दिया करते है।"

रघुवीर सहाय का 'मन की बात' दूसरा नाटक है। 'मन की बात' नाटक का नायक रोजगार के लिए तरसता हुआ जीवन संघर्ष कर रहा है। उसके उपर नौ सौ रुपये दो आने ग्यारा पाई का कर्ज होता है। वह कैसा अदा करना इसलिए चिंतीत है। गाँव छोडकर रेल से शहर चला जाता है। रेल से उतर ने के बाद छोले बेचने के व्यवसाय के बारे में विचार करता है। छोले बेचकर कर्ज अदा करने का और परिवार का भरण पोषण करने का विचार करता है।

रघुवीर सहाय का 'सुख के लिए' तिसरा नाटक है इस नाटक में विजय पढा लिखा होने पर भी नोकरी के लिए तरसता है। बोसेजगारी के लिए मात करने के लिए रामलाल ॲण्ड सन्स में डेढ सौ रुपये महिना तनखा

Scanned with OKEN Scanner

पर नौकरी स्विकारता है। नोकरी और रुपयों के लालच के कारण पत्नी को हनीमून ले जाने के लिए वह समय नही लिकाल पाता है इसी कारण उनकी पत्नी रेवा पडोस के बलवंत के साथ शादी करके हनीमून चली जाती है। इस नाटक में विजय के जीवन का जीवनसंघर्ष दिखाई देता है।

रघुवीर सहाय जी ने अपने नाटकों के व्दारा बेरोजगारी के रुप में विराट समस्या को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। नाटक के नायक जीवन जीने के लिए हर तरह का काम करके जीवन संघर्ष करते हुए दिखाई देते है।

संदर्भ-

१. रघुवीर सहाय रचनावली - सुरेश शर्मा
२. भारतीय समाज तथा सामाजिक संस्थाए – प्रो. पी. सी. दिक्षित
३. नए साहित्य के आयाम – डॉ. रामप्रसाद मिश्र
४. जैनेन्द्र के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक समस्याएँ – डॉ सुरेश गायकवाड

Scanned with OKEN Scanner